स पुस्तक का पढाना बडोदा राज्य के शिक्षण बिभाग में शुरू हुआ है।

हिन्दी मार्गोपदेशिका

भाग २.

चोधरी कन्हीसिंह कल्याणसिंह
सिद्धपुर.

कीमत ०—३—०

इस पुस्तक का पढ़ाना बड़ोदा राज्य के शिक्षण विभाग में शुरू हुआ है।

हिन्दी मार्गोपदेशिका

भाग २.

प्रयोजक और प्रकाशक:

चोधरी कन्हीसिंह कल्याणसिंह
सिद्धपुर.

एज्युकेशनल सर्विस, बड़ोदा राज्य.

आवृत्ति चौथी वि. सं. १९८६ सन् १९३०

कीमत ०-३-०

श्रीयुत गजानन विश्वनाथ पाठक द्वारा
आदित्यमुद्रणालय (अहमदाबाद) में मुद्रित.



શ્રીમંત સરકાર સયાજીરાવ મહારાજા સાહેબ

આદિત્ય મુદ્રણાલય

॥ ओ३म् ॥

समर्पण

हिन्दी भाषा की उन्नति में रसिक, सत्कार्य के उत्तेजक, सविद्य, स्वकर्तव्यनिष्ठ, साक्षरसमाजभूषण, सुपात्रों को आश्रयदाता, आर्यकुल भूषण, विद्वद्वर्य श्रीमान्

रा. रा. नन्दनाथ केदारनाथ दीक्षित

के

चरणकमल में

यह तुच्छ भेट

समर्पित

करता

हूं ।

आप का विनीत गुणज्ञ,

चोधरी कन्हीसिंह.

प्रथम आवृत्ति की प्रस्तावना.

सज्जनो ! हिन्दी भाषा के ज्ञाता प्रायः हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग में पाये जाते हैं और यह भाषा ऐसी सुगम और सरल है कि थोड़े प्रयास से इस को सीख सकते हैं। इसी कारण हिन्दुस्तान के सर्व नेता इस भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिये तन, मन और धन से प्रयत्न कर रहे हैं। हमारे विद्याविलासी श्रीमन्त बड़ोदा नरेश ने इस भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने के उद्देश से अपने राज्य में वर्षों से हिन्दी भाषा का शिक्षण दाखिल किया है। उनश्री के उद्देश को फलीभूत करने के हेतु से यह हिन्दी मार्गोपदेशिका नामक पुस्तक लिखी है।

इस पुस्तक के रचने में हमारे माननीय श्रीमान मे. रा. रा. नरहरिशंकर शिवशंकर शास्त्री साहिब हेडमास्तर हाईस्कूल सिद्धपुर, श्रीमान् मे. रा. रा. गोकुलदास मथुरांदास साहिब, एज्युकेशनल इन्स्पेक्टर कड़ी प्रान्त, श्रीमान् तर्कशिरोमणि पंडित जयदत्त शर्मा काव्यतीर्थ, श्रीमान चतुरभाई पुरुषोत्तमभाई पटेल बी. ए., श्रीमान् अम्बालाल माणिकलाल सोनी, श्रीमान पंडित एस. आर. तिवारी तथा श्रीमान् उपाध्याय शंकरलाल बैजनाथ शर्माने अमूल्य सहायता दी है। उन महाशयों का हार्दिक उपकार मानता हूं।

ता. २०-४-२८

सिद्धपुर.

चोधरी कन्हीसिंह.

ओ३म्

हिन्दी मार्गोपदेशिका.

पाठ १

सारे-આખો, ब्याह-લગ્ન, दिलावर-હિમ્મતવાન, इल्म-વિદ્યા, सभी-બધાં, अछूत-અસ્પર્શ્ય, भारती-मन्दिर-સરસ્વતિનું મંદિર.

प्रजा का नाथ कैसा हो सियाजीराव जैसा हो [टेक]
प्रजा को पुत्रवत् पाले अहोनिश राज्य संभाले
सुधारा राज्य सारे को सुधारक हो तो ऐसा हो १
निकाले वहम सब खोटे प्रजा की वृद्धि है कीनी
हटाया ब्याह बचपन का दिलावर हो तो ऐसा हो २
बहा दी इल्म की धारा पीयें सब ज्ञान का प्याला
नहीं है भेद जाति का प्रचारक हो तो ऐसा हो ३
पढ़ाना राज्य में हिन्दी किया है ज़ोर का जारी
बचाया है अछूतों को सुरक्षक हो तो ऐसा हो ४
निकाली है कला शाला किया है देश का उद्धार
फैलाया नाम दुनिया में बहादुर हो तो ऐसा हो ५
सजाया शहर अपने को बनाया भारती-मन्दिर
गिनाया हिन्द का नेता शुभेच्छक हो तो ऐसा हो ६

चौधरी.

पाठ २

इच्छावाचक वर्त्तमान.

ક્રિયાના ચિહ્ન “ना” નો “ने” કર્યા પછી “वाला है” અથવા “को है” નાં રૂપો ઉમેરવાથી ઇચ્છાવાચક વર્ત્તમાન કાળ બને છે, જેમકે मैं आने वाला हूं હું આવનાર છું. मैं जाने वाला हूं હું જનાર છું. मैं लिखने को हुं હું લખવાનો છું.

इच्छानुवाचक वर्त्तमानकाल. करना धातु.

१	मैं करने वाला हूं	हम करने वाले हैं
	હું કરનાર છું.	અમે કરનાર છીએ.
२	ू करने वाला है	तुम करने वाले हो, आप करने वाले हैं
	તું કરનાર છે.	આપ કરનાર છો.
३	वह करने वाला है	वे करने वाले हैं
	તે કરનાર છે.	તેઓ કરનાર છે.
१	मैं करने को हूं	हम करने को हैं
	હું કરવાનો છું.	અમે કરવાના છીએ.
२	तू करने को है	तुम करने को हो, आप करने को हैं
	તું કરવાનો છે.	તમે કરવાના છો.
३	वह करने को है	वे करने को हैं
	તે કરવાનો છે.	તેઓ કરવાના છે.

स्त्री लिङ्ग.

१ मैं करने वाली हूं   ३ वह करने वाली है, इ०

१ मैं करने को हूं   ३ वह करने को है, इत्यादि

इच्छावाचक भूतकाल.

ક્રિયાના ચિહ્ન "ना" ને "ने" કર્યા પછી "वाला था" અથવા "को था" નાં રૂપો ઉમેરવાથી ઇચ્છાવાચક ભૂતકાળ બને છે, જેમકે मैं आने वाला था હું આવનાર હતો. वह आने को था તે આવવાનો હતો.

इच्छावाचक भूतकाल.

१ मैं करने वाला था   हम करने वाले थे
હું કરનાર હતો.   અમે કરનાર હતા.

२ तू करने वाला था   तुम करने वाले थे, आप करने वाले थे
તું કરનાર હતો.   તમે કરનાર હતા.

३ वह करने वाला था   वे करने वाले थे
તે કરનાર હતો.   તેઓ કરનાર હતા.

१ मैं करने को था   हम करने को थे
હું કરવાનો હતો.   અમે કરવાના હતા.

२	तू करने को था તું કરવાનો હતો.	तुम करने को थे, आप करने को थे તમે કરવાના હતા.
३	वह करने को था તે કરવાનો હતો.	वे करने को थे તેઓ કરવાના હતા.

स्त्री लिङ्ग.

१ मैं करने वाली थी ३ वह करने वाली थी, इ०

१ मैं करने को थी ३ वह करने को थी. इ०

વાક્યો.

मुआयना–તપાસ. तशरीफ़ लाना–પધારવું. वाशिंदे–રહેવાસીઓ. तातील–રજા. कैंची–કાતર. नुमाइश–પ્રદર્શન. ज़बान–ભાષા. बढ़ई–સુતાર. सन्दूक़–પેટી. भेट–નજરાણું. हाकिम—અમલદાર. बड़ादिन—નાતાલ. रईस–વતનદાર. कौवा—કાગડો. किशमिश—દ્રાક્ષ. जेलख़ाना—કેદખાનું. भागना–નાસવું. हलवाई–કંદોઇ. काशीफल–કહોળું. भेड़िया–વરૂ. भेड़–ઘેટું. कतरना–કાતરવું. जेब–ગજવું. बोतल––શીશી. मिट्टी का तेल–ઘાસલેટ. अलमारी–કબાટ. मोरी–ગટર. अगहन–માગસર. शादी–લગ્ન. कुञ्जी—ખુલાસો.

इन्स्पेक्टर साहिब मदर्से का मुआयना करनेको आने वाले हैं। कितने विद्यार्थी फुटबौल की मेच खेलने को मेरठ जाने वाले हैं ?। तुम्हारे मकान पर आज कौन तश-

रीफ़ लाने वाले हैं। इस गांव के बाशिंदे अपना गांव खाली करने को थे। गर्मियों की तातील में तुम क्या लिखने वाले थे। मैं इलाहाबाद की नुमाइश में से कैंची खरीदने वाला हूं। अब तुम कौन सी ज़बान का पढ़ना शरु करने वाले हो। बढ़ई लाहोर से आकर सन्दूक बनाने वाला है। बड़े दिन के रोज़ रईस लोग बड़े हाकिमों को भेट देने वाले हैं। कौवा दही खाने को था। काश्मीर से किशमिश की सन्दूक मेरे पिता भेजने को है। चोर जेलखाने में से भागने को था। हलवाई काशीफल की तरकारी बनाने-वाला है। भेड़िया भेड़ को फाड़ने को था। ठग मेरे कोट की जेब कतरने को था। बोतल फूटने को है। मिट्टी के तेल में आग लगने वाली थी। अलमारी में से किताबें गिरने को थीं। मोरी में से सांप निकलने वाला है। अगहन के महिने में मेरी बहिन की शादी होने वाली है। गोखले गणित की कुञ्जी थोड़े दिन में तैयार करने वाला हूं।

ગુજરાતી વાકયો:—(૧) હું અહમદાબાદ જનાર છું. (૨) મહારાજા સાહેબ નિશાળમાં પધારવાના છે. (૩) નિશાળમાં રજા પડવાની છે. (૪) મારો ભાઈ કેરીઓ (आम) મોકલનાર હતો. (૫) ઉનાળામાં સાહેબ બહાદુર નેનીતાલ જનાર છે. (૬) ઝગડો ઉડવાનો હતો. (૭)

ચોર નાસવાનો છે. (૮) તે ચોપડી લખનાર છે. (૯) તેઓ પડવાના હતા. (૧૦) હું એક ચપ્પુ ખરીદનાર છું.

पाठ ३

जाति विचार.

હિન્દીમાં ફક્ત બેજ જાતિ છે. પુલ્લિંગ અને સ્ત્રી લિંગ.

નરજાતિના નામને आ, ई અને आनी લગાડવાથી નારી જાતિ થાય છે.

દાખલા.

१ आ–पाठक–पाठिका, अज–अजा, साहिब–साहिबा, शूद्र–शूद्रा, आर्य–आर्या, बाल–बाला, पंडित–पंडिता, ई–कुमार–कुमारी, देव–देवी, गोप–गोपी, ब्राह्मण–ब्राह्मणी, आनी–भव–भवानी, रुद्र–रुद्राणी, इन्द्र–इन्द्राणी.

२ ધંધા કરનાર નરજાતિના નામને इन લગાડવાથી નારીજાતિ થાય છે, જેમકે—इन–धोबी–धोबिन; तेली–तेलिन, मोची–मोचिन, माली—मालिन.

३ કેટલાંક નરજાતિના નામને नी લગાડવાથી નારી જાતિ થાય છે.

नी–मोर–मोरनी, हंस–हंसनी, सिंह–सिंहनी, हाथी–हथिनी, नट—नटनी, ऊंट—ऊंटनी.

૪ કેટલાંક નામની નારીજાતિ જૂદા શબ્દોથી બને છે. જેમકે मरद—औरत, भाई—बहिन, पिता—माता, बाप—मा, बैल—गाय, राजा—रानी.

૫ પદવીવાચક નામની નારીજાતિ અન્ત્ય સ્વરને સ્થાને आइन લગાડવાથી થાય છે. જેમકે चौबे—चौबाइन, ठाकुर-ठकुराइन, चौधरी—चौधराइन.

૬ જો નિર્જીવવાચક નામની અન્તે अ અથવા त હોય તો તે પ્રાયઃ સ્ત્રી લિંગ હોય છે. જેમકેઃ—

अ—क़लम—मिर्च—मेज़ सन्दूक़—बन्दूक.

त—रात—दवात (ખડીયો) दावत (જમણ) बरात (જાન)

જે भाववाचक નામની અન્તે पा—पन હોય તે પ્રાયઃ નરજાતિ હોય છે જેમકેઃ—बुढ़ापा—अंधापा बचपन—लड़कपन.

वाक्यो.

भागना—નાસવું. मेलजोल—સંપ. या—અથવા. औरत—બાયડી. नाई—હજામ. भैंसा—પાડો. बढ़ई—સુતાર. चुनना ચૂંટવું. कोल्हू—ઘાણી. लेकिन—પણ.

सुनार और सुनारिन खड़े २ हंस रहे हैं। पंडित जी पंडिताइन से कहते हैं कि हे पंडिताइन! यह संसार नाशवन्त है। स्वभाव में सिंहनी सिंह से उग्र होती है।

हाथी और हथिनी उस मनुष्य के पीछे भाग रहे हैं। लुहार और लुहारिन बड़े मेल जोल से रहते हैं। भाई बहिन दोनों एक ही मदर्से मे पढ़ते हैं। एक आदमी या दो औरतें एक नाम को आठ दिन में कर सकते हैं। हजामत का काम नाई करता है और उस की स्त्री नाइन निल्हाने धुलाने का काम करती है। सुनार अपनी स्त्री सुनारिन का गहना घड़ रहा है। कुतिया से कुत्ता वलवान होता है। भैंसा गाड़ी, हल खेंचता है और भेंस दूध देती है। इस मदर्से में लड़का लड़की दोनों पढ़ते है। ऊंट और ऊंटनी चरते हैं। दुबे दुबाइन को पढ़ाते हैं। माली बाग़ की रखवाली कर रहा है और मालिन फूल चुन रही है। चाचा चाची से कभी नहीं लड़ते। राजा और रानी दोनों गर्मियों में शिमले हवा खाने जाते हैं। तेली कोल्हू में तिल पील रहा है और तेलिन तेल बेच रही है। ठाकुर ने ठकुराइन से कहा॥

पाठ ४

वचन विचार.

आकारान्त सिवाय नरजाति नामना भूळ ३५ हिन्दीमां बहु वचनमां वपराय छे. जेमकेः—हाथी चरते हैं।

હિન્દીમાં આકારાન્ત નરજાતિ નામનો બહુવચનનો પ્રત્યય ए છે અને ઉકારાન્ત તથા અકારાન્ત, આકારાન્ત નારી જાતિનો एं છે અને પ્રત્યયો અંત્ય સ્વરને બદલે વપરાય છે. પરન્તુ આકારાન્ત ઉકારાન્ત નારી જાતિનો અન્તિમસ્વર કાયમ રહે છે. જેમકેઃ—

बकरा–बकरे, घोड़ा–घोड़े गधा—गधे, कुत्ता—कुत्ते.
क़लम–क़लमें, किताब—किताबें, माला—मालाएं,
गाय—गायें, बहू—बहूएं, वधू—वधूएं, सासू–सासूएं.

ईकारान्त નારીજાતિ શબ્દોના બહુવચન **यां** લગાડવાથી થાય છે. જેમકે–**घोड़ी–घोड़ियां,**+ **नदी–नदियां, स्त्री–स्त्रियां, गोपी–गोपियां, नारी–नारियां.**

કેટલાક શબ્દોમાં **गण, लोग, जाति** ઈત્યાદિ લગાડવાથી પણ બહુવચન થાય છે. જેમકે **पाठक--पाठकगण, मुसलमान —मुसलमान लोग, अंग्रेज़—अंग्रेज़ लोग, श्रोता–श्रोता गण, मनुष्य–मनुष्य जाति.**

आकारान्त સિવાય નરજાતિ નામની પૂર્વે બહુવચનના અર્થવાળું વિશેષણ હોય તો તે નામનો બહુવચનનો પ્રત્યય લગાડવાની જરૂર નથી. જેમકેઃ—**आदमी—सैंकड़ों**

+ આ **यां** પ્રત્યય લગાડતા પહેલાં અંત્ય **ई** ને હ્રસ્વ કરવી પડે છે.

आदमी, बन्दर—हजारों बन्दर। પરન્તુ સ્ત્રીલિંગ નામને બહુવચનનો પ્રત્યય લાગે છે. જેમકે-लड़की–चार लड़कियां बिल्ली—सैंकड़ों बिल्लियां; औरत—चार औरत- : औरतें.

સામાન્ય નિયમઃ—જ્યારે નામને વિભક્તિ પ્રત્યયો લગાડવામાં આવે છે ત્યારે બધા નામના બહુવચ. 'ओं' પ્રત્યય ઉમેરવાથી થાય છે અને તે પ્રત્યય સાથેના : યાવાચક વિશેષણને પણ લાગે છે. જેમકેઃ—

पाठकगण—पाठक गणों को चाहिये.

माता—दाताओं को नमन करो.

किताब—किताबों को मेज़ पर रक्खो.

बकरा—बकरों को चरने दो। चारों बकरों को आने दो.

अपवाद–ईकारान्त નારીજાતિ નામનું બહુવચન નિયમ પ્રમાણે કર્યા પછી ओं લગાડવામાં આવે છે. જેમકેઃ—

બહુવચન	વિભક્તિ સાથે બહુવચન
नदी—नदियां	नदियों में
मछली—मछलियां	मछलियों ने
गोपी—गोपियां	गोपियों से, इत्यादि.

खेत—ખેતર. आम—આંબો. पौधे—છોડવો. एक से—એક સરખા. सहारे—મદદ. ज़ियादातर—મોટે ભાગે. गिरना—પડવું. घोंसला—માળો. बसेरा लेना—આશ્રય લેવું. औरत—બાયડી. तवारीख़—ઇતિહાસ. यक़ीन—વિશ્વાસ. खुदा—ઈશ્વર. फ़िदा होना—ઘેલા થવું. चुस्त—દૃઢ. चापलूस—ખુશામતિયો. चापलूसी—ખુશામત.

વાકયો.

दुष्ट जन सज्जनों के संग कभी नहीं रह सकते, ऊंट हमारे खेत में आम के पौधे खा गया है। ईश्वर की दृष्टि में गाय बकरे सब एक से हैं। अंग्रेजो के पास से नियमित रहने का गुण सीखना चाहिये। बैलों के सहारे हमारे देश में खेती होती है। शील यह स्त्रियों का अंजन है। क्षमा यह साधुओं का भूषण है। मनुष्य कहते है। इस दुनिया में ईश्वरने जो कुछ पैदा किया है वह मनुष्य जाति के भले के लिये किया है। सब नदियां ज़ियादातर समुद्र में गिरती हैं। बन्दर पेड़ों पर और पक्षी अपने घोसलों में बसेरा लेते हैं। हज़ारों आदमी महाराजा साहिब के दर्शन करने को स्टेशन पर इकट्ठे हुए थे। पंडित लोग राजा परीक्षित की सभा में अपने २ आसन पर शुकदेवजी से कथा सुनने लगे। प्राचीन काल में औरतें भी युद्ध में जाती थीं ऐसा तवारीख़ पढ़ने से ज्ञात होता है। चोरी का कभी यक़ीन न करना चाहिये।

चार औरत इस काम को चार दिनमें कर सकती हैं। ये औरतें कहां को जाति हैं। मैं आप के चरण कमलों में उपस्थित हूं। मुसलमान लोग खुदा के नाम पर फ़िदा होते हैं। मनुष्य मात्र को अपने धर्म पर चुस्त रहना योग्य है। चापलूसों की आदत चापलूसी करने की होती है।

पाठ ५

विध्यर्थ.

ક્રિયાપદના મૂળરૂપમાં "चाहिये" ઉમેરવાથી વિધ્યર્થ બને છે અને કર્તા બીજી વિભક્તિમાં મુકાય છે. જેમકે, तुम को महिमान का सत्कार करना चाहिये-તમારે અતિથિનો સત્કાર કરવો જોઇએ.

विद्यार्थिओं को सबेरे चार बजे उठना चाहिये-
વિદ્યાર્થિઓએ સવારે ચાર વાગે ઉઠવું જોઇએ.

१ मुझ को करना चाहिये	हम को करना चाहिये
મારે કરવું જોઇએ.	અમારે કરવું જોઇએ.
२ तुझ को करना चाहिये	तुम को करना चाहिये।
	आप को करना चाहिये.
તારે કરવું જોઇએ.	તમારે કરવું જોઇએ.

३ उस को करना चाहिये   उन को करना चाहिये

તેણે કરવું જોઇએ.   તેમણે કરવું જોઇએ.

સ્ત્રી લિંગનાં રૂપો પુલ્લિંગ પ્રમાણે જ થાય છે.

વાકયો.

सुबह—સવાર. शाम—સાંજ. दोपहर—બપોર. बाद—પછી. इन्सान—મનુષ્ય. साल-વર્ષ. विनौला—કપાસીયા. रोग़न—તેલ. घड़ी—ઘડીયાળ. पुरजे—ઘડીયાળનાં અંગો. परचा—પ્રશ્ન પત્ર. ग़लत—ખોટો. हैज़ा—કોલેરા. सावधान—સાવચેત. चरखा-રેંટીઓ. जुलाहा-વણકર. तादाद-સંખ્યા. बढ़ना-વધવું. क़हत साली-દુષ્કાળ. मालगुज़ारी-જમીનવેરો. हर्फ़—અક્ષર. सयाने-સમજણા. खेल-રમત. कभी-કદી. पतियाना-વિશ્વાસ કરવો. क्योंकि-કેમકે. पढ़ना लिखना-ભણવું ગણવું. राह—રસ્તો. सताना-પજવવું. लेकिन-પરન્તુ. अब तक-અત્યાર સુધી. ग़फ़लत—ભૂલ. बहस-વિવાદ. जान पहिचान—ઓળખાણ. अंडी—એરંડી. क़ानून—કાયદો. ख़िलाफ़—વિરૂદ્ધ. बर्तना-વર્તવું. उपला-છાણું. खुश्क—સૂકું. ताऊन-પ્લેગ. कंकड़-કાંકરો. बालू-રેતી. कोयला-કોલસા. रुई-રૂ. दाम-મૂલ્ય. भिजवादेना-(પ્રેરણાર્થ) મોકલાવવું. बारिश-વરસાદ. रिश्तेदार-સગોવહાલો. परहेज़-ચરી. आटा-લોટ. गूदना-ખુંદવું. चक्की-ઘંટી. पीसना-દળવું.

मनुष्य को हमेशा सुबह शाम ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये। दो पहर को भोजन के वाद इन्सान को आराम लेना चाहिये। बिनौले का तेल तुम को खाना चाहिये। पच्चीस साल तक विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य पालना चाहिये। बादाम को रोग़न से घड़ी के पुरजे साफ़ करने चाहिये। इस परचे में तुम्हारा एक भी हिसाब ग़लत न होना चाहिये। दांत में मंजन और आंख में अंजन प्रति दिन करना चाहिये। कान में लकड़ी नाक में अंगुली कभी न करनी चाहिये। हैज़े की बीमारी से सब को सावधान रहना चाहिये। चरखे का प्रचार तमाम देश में एक कोने से दूसरे कोने तक होना चाहिये। आपस में बहस न करनी चाहिये। जुलाहों की तादाद हमारे देश में बढ़नी चाहिये। क़हत साली में सरकार को मालगुज़ारी माफ़ करनी चाहिये। तुम को बड़े २ हर्फ़ लिखने चाहिये। सियाने लड़कों को यह खेल न खेलना चाहिये। भाई भाई को आपस में न लड़ना चाहिये। झूंठ कभी न बोलना चाहिये। लड़को, तुम को राह में किसी से लड़ाई झगड़ा न करना चाहिये। हर एक आदमी को पढ़ना लिखना आना चाहिये। ग़रीब को न सताना चाहिये। अब तक तो तुम ने बड़ी ग़फ़लत की, लेकिन अब सावधान रहना चाहिये। बड़े आदमियों से तुम को जान पहिचान रखनी चाहिये। बच्चों को आठवें दिन अंडी के तेल का जुलाब देना चाहिये।

क़ानून के ख़िलाफ़ न वर्तना चाहिये। दाल बाटी के लिये उपलों की आग चाहिये। घोड़े को ख़ुश्क़ चने न देने चाहिये। ताऊन का उपद्रव मालूम होते ही शहर खाली करना चाहिये। कंकड़, बालू और कोयले से पानी साफ़ करना चाहिये। आप को पांच सेर रुई के दाम मेरे घर भिजवा देना चाहिये। बारिश के दिनों में छत्री विना बाहर न जाना चाहिये। रिश्तेदारों के बीच में लड़के को न धमकाना चाहिये। रोगी को परहेज़ रखना चाहिये। गेंहू के आटे को ख़ूब गूंदना चाहिये। हर एक स्त्री को प्रति दिन चक्की से पीसना चाहिये। दाम पूछ कर चीज़ लैनी चाहिये।

ગુજરાતી વાક્યો—(૧) દાન કરવું જોઈએ. (૨) તમારે એરંડીયાનો જુલાબ લેવો જોઈએ. (૩) વિદ્યાર્થિઓએ હાજર રહેવું જોઈએ. (૪) તેણે દૂધ પીવું જોઇએ. (૫) માંહો માંહે પ્રીતિ રાખવી જોઇએ. (૬) તમારે ફરવા જવું જોઈએ. (૭) લુચ્ચાની સોબત ન કરવી જોઇએ.

पाठ ६

संबंधक भूतकृदन्त

૧ ક્રિયાના આજ્ઞાર્થ એકવચનમાં **कर** અથવા **कर के** પ્રત્યય ઉમેરવાથી સંબંધક ભૂતકૃદંત બને છે. જેમકેઃ—

धातु	आज्ञार्थ	संबंधक भूतकृदन्त
खाना	खा	खाकर, खाकर के ખાઇને.
लाना	ला	लाकर, लाकर के લાવીને.
बोलना	बोल	बोलकर, बोलकर के બોલીને.
पुकारना	पुकार	पुकार कर, पुकार कर के પોકારીને.

२ ક્રિયાનું આજ્ઞાર્થ એકવચન પણ સંબંધક ભૂતકૃદન્ત તરીકે વપરાય છે. જેમકે—राजा घोड़े पर सवार हो जंगल को गया રાજા ઘોડા ઉપર સવાર થઈ જંગલમાં ગયો. यह लड़का हाथ में टोपी ले सड़क पर दौड़ रहा था—આ છોકરો હાથમાં ટોપી લઇ સડક ઉપર દોડતો હતો, ઇત્યાદિ.

पसीना—પરસેવો. बदबू—દુર્ગન્ધ. टुकड़ा—કટકો. चुगना—ચાંચથી વીણવું. थैली—કોથળી. मुल्क—દેશ. मुलाजम—નરમ. प्यास—તરસ. ज्यों ही—જેમ જ. बुझाई—મટાડી. गोबर—છાણ. बस्ता—દફતર. सफ़ेद—ધોળું. खोज—શોધ. बिछाना—પાથરવું. चद्दर—ચાદર. हिस्सा—ભાગ सरीखे—જેવા. आंख में खून बरसना—ક્રોધ આવવો. खून—લોહી. तड़पना—તરફડીયાં મારવાં. ख़ालिस—ચોખ્ખો. फ़ी सदी—સેંકડે. खुजली—ખસ. इस्तेमाल करना—ઉપયોગ કરવો. मज़हब—ધર્મ. पुरानी—જુની. मज़मून—નિબંધ. रस्सी—દોરડું. फ़र्श—ઓકડામાં જમીનનો ભાગ. झंडा—ધ્વજા. चिट्ठीरसा—પોસ્ટમેન. लिफ़ाफ़ा—પરબીડીયું. अभी—હમણ

बद शकल—ખરાબ ચહેરો. किसान—ખેડુત. पनाह लेना—આશ્રય લેવો. भागकर—નાસીને. मिश्री—સાકર. ताक़त—શક્તિ. एड़ी—પગનું તળીયું. पटवारी—તલાટી.

उस ने सारे दिन महिनत कर के आपना पसीना बहाया। वह बदबू के मारे शहर से बाहर जा बसा है। मुर्ग़ी रोटी के टुकड़ चुग कर पेट भरती है। सौदागर रुपयों की थैली घोड़े पर रख अपने मुल्क की ओर रवाना हुआ। रेशम के मुलायम कपड़े पहिन कर वे तमाशा देखने गये हैं। एक कौआ प्यास के मारे उड़ता २ पानी के घड़े पर आकर बैठा। एक वक्त वह जंगल में हो कर जा रहा था। व्याध-ने मृग जान कर तीर छोड़ा और वह श्री कृष्णचन्द्रजी की एड़ी में जा कर लगा। ज्योंही पानी चढ़ कर घड़े के उपर आया कौवे ने अपनी प्यास बुझाई। मुसाफ़िर चलते २ थक कर एक पेड़ के नीचे सो गया। गाय का गोबर हिन्दुशास्त्र में पवित्र माना गया है क्योंकि ज़हरी जन्तु इस के लीपने से नष्ट होकर फिर होने नहीं पाते। पटवारी अपना बस्ता ले कर के कचहरी गया। नवाब साहिब सफ़ेद घोड़े पर बैठ कर शिकार की खोज में गये हैं। पलंग बिछा कर उपर से चद्दर बिछा दो। बाप ने अपनी पूंजी के दो हिस्से कर के एक एक हिस्सा अपने दोनों लड़कों को दिया। तुम सरिखे लड़कों को देख कर

उन की आंख में खून बरसता है। उन को तड़पते देखकर मुझ से बिना हंसे न रहा गया।

ख़ालिस तेल में गंधक मिलाकर खुजली पर इस्ते-माल करो। श्रीमन्त बड़ोदा नरेश ने मदर्सों में फी सदी १५ माफ़ी दे कर प्रजा पर बड़ा उपकार किया है। गाय को रस्सो से बांध कर जंगल में चराने को ले जाओ। उन्हों ने खूब अच्छी तरह से समझ बुझ कर निश्चय कर लिया है कि दुनिया में वेद सब से पुरानी मज़हब की कि-ताब है। तुम्हारे मज़मून को पढ़ कर वे बड़े ख़ुश हुए। उस ने उछल कर भाई की छाती में लात मारी। आप ने फ़र्श पर सो कर अपनी तबियत को ख़राब कर दिया है। बहादुर सिपाई लड़ाई का झंडा हाथ में ले कर दुश्मन के लश्कर की ओर दौड़ा। चिट्ठी रसा एक लिफ़फ़ा आप के मकान पर अभी दे कर गया है। लड़की दर्पन में अपनी बद शकल देख मा से कहने लगी। दूध में मिश्री डाल कर पीने से बड़ी ताक़ात आती है।

ગુજરાતી વાક્યોઃ—(૧) દુધ સાકર નાખીને પી. (૨) ચોરને બાંધીને કેદખાને લઈ ગયા. (૩) ચોપડી હાથમાં લઇ વાંચવું જોઇએ. (૪) કસરત કરી આરામ લેવો જોઇએ. (૫) તે સમજીને પાઠ વાંચે છે. (૬) હું ઘોડા ઉપર સવાર થઈ

જંગલમાં ગયો. (૭) રસ્તામાં જોઇને ચાલવું જોઇએ. (૮) સોટી લઇને બહાર જવું. (૯) નહાઇને ખાવું જોઇએ. (૧૦) જંગલ જઈને દાતણ કરવું.

पाठ ७

सामान्य कृदन्त.

સામાન્ય કૃદન્ત નામ તરીકે વપરાય છે. એને વિભક્તિના પ્રત્યયો પણ લાગે છે. જેમકેઃ—

विभक्ति	करना धातु
૧ લી करना કરવું.	
૨ જી करने को કરવાને.	
૩ જી करने से કરવાથી.	
૪ થી करने के लिये. करने को કરવા માટે, કરવાને.	
૫ મી करने से કરવાથી.	
૬ ઠી करने का, करने की, करने के કરવાનું. કરવાની, કરવાનાં.	
૭ મી करने में, करने पर, करने पे. કરવામાં, કર્યા પછી.	

वर्त्तमान कृदन्त.

૧ वर्त्तमान काल માંથી है નાં રૂપો કાઢી નાંખવાથી જે શેષ રહે તે વર્ત્તમાન કૃદન્ત હોય છે.

वर्त्तमान काल	वर्त्तमान कृदन्त	
	पुं.	स्त्रीलिङ्ग.
हंसता है	हंसता હસતો	हंसती હસતી
लिखता हूं	लिखता લખતો	लिखती લખતી
गाते हैं	गाते ગાતા	गाती ગાતી

(૨) વર્ત્તમાન કાળમાં है નાં રૂપો કાઢી हुआ નાં રૂપો ઉમેરવાથી પણ વર્ત્તમાન કૃદન્ત બને છે. જેમકેઃ—

वर्त्तमान काल	करता है	लिखता है	गाता है
वर्त्तमानकृदन्त पु.	करता हुआ	लिखता हुआ	गाता हुआ
,, स्त्री.	करती हुई	लिखती हुई	गाती हुई

કોઈ કોઈ વખત વર્ત્તમાન કૃદન્ત બેવડાવવામાં આવે છે. જેમકે मैं दौड़ते दौड़ते थक गया હું દોડતો દોડતો થાકી ગયો. मेरा हंसते २ पेट फट गया મારૂં પેટ હસતાં હસતાં ફાટી ગયું.

अफ़सोस—દિલગીરી. ज़रा—થોડું. जुआ—જુગાર. ख़लल—હરકત. इज्ज़त—આબરૂ. चन्दा—ટીપ. आला—ઉત્તમ. दर्जा—વર્ગ. (પ્રકાર) औरों—બીજા. बान—ટેવ. लाड़प्यार—વહાલ. फूट २ कर रोना—પોકપોક રડવું.

नज़र—દૃષ્ટિ. छेड़ना—છંછેડવું. मुंह—મોઢું. खरहा—સસલો. पागल—ગાંડો. नांई—પેઠે. ढूंढ़ना—શોધવું. झोपड़ी—છાપરું. दस्त—ઝાડો. पेचिस—મરડો. घसीटना—ઘસડવું. फटकने पाना—પાસે આવવું. बचपन—નાનપણ. औलाद—સંતાન. शफ़ाखाना—દવાખાનું. पेश्तर—પહેલાં. मुनासिब—ઉચિત. मरीज़—માંદો માણસ. कनस्टर—ડબ્બો.

बड़े अफ़सोस की बात है कि आप पढ़ने में ज़रा भी ध्यान नहीं देते। जुआ खेलने से आदमी की इज्ज़त में खलल पैदा होता है। दुःख में धीरज रखना यह मनुष्य का कर्त्तव्य है। वे अतिवृष्टि से पीड़ित मनुष्यों के वास्ते चन्दा इकट्ठा करने को गये हैं। भूखे को भोजन देना आला दर्जे का पुण्य है। शिवाजी यहां तक हिम्मतवान थे कि दुश्मनो से घिरजाने पर भी डर उन के पास न फटकने पाता। बड़े आदमी बचपन से ही अपनी औलाद को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। शफ़ाखाने में सवेरे ११ बजे से पेश्तर जाना मुनासिब है। डाक्टर साहेब मरीज़ों को देखने गये है। लड़की के ब्याह में दस कनस्टर घी के खर्च करने की जरूरत नहीं हैं।

ગુજરાતી વાક્યો—(૧) દૂધ પીવાથી શક્તિ વધે છે. (૨) એવાં કામ કરવાથી છેટે રહો. (૩) સવારે ફરવા જવું તે સારૂં છે. (૪) બ્રહ્મચર્ય પાળવું તે વિદ્યાર્થિનો પરમ ધર્મ છે. (૫)

બ્રહ્મીનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિ વધે છે. (૬) ઈન્સ્પેક્ટર સાહેબ પરીક્ષા લેવાને આવ્યા છે. (૭) લખવાની ટેવ પાડો. (૮) તમારે આ કામ કરવાની ફરજ છે.

पाठ ८

भूत कृदन्त.

ભૂતકાળમાં हुआનાં રૂપો ઉમેરવાથી ભૂતકૃદન્ત બને છે.

धातु	भूतकाल	એ० व० भूत कृदन्त	બ० व०
करना	किया	किया हुआ કરેલું	किये हुए
लिखना	लिखा	लिखा हुआ લખેલું	लिखे हुए
आना	आया	आया हुआ આવેલું	आये हुए

स्त्रीलिङ्ग भूतकृदन्त

करना	की हुई	की हुईं
लिखना	लिखी हुई	लिखी हुईं
आना	आई हुई	आईं हुईं

भविष्यत्कृदन्त

ક્રિયાના ચિહ્ન ना નો ने કર્યા પછી वाला ઉમેરવાથી ભવિષ્યત્ કૃદન્ત બને છે.

धातु	भविष्यत्कृदन्त	
	एकवचन	बहुवचन
करना	करने वाला કરનાર.	करने वाले
लिखना	लिखने वाला લખનાર.	लिखने वाले
आना	आने वाला આવનાર.	आने वाले

स्त्रीलिङ्ग भविष्यत् कृदन्त

करना	करने वाली	करने वालीं
लिखना	लिखने वाली	लिखने वालीं

सराय--ધર્મશાળા. सना हुआ--ખરડાએલો. नेवला--નોળીયો. छिपाना--સંતાડવું. लोहू--લોહી. रोना--રડવું. फ़र्ज़ करना--ધારવું. आख़िरकार--છેવટે. सुलगना--સળગવું. सौंफ--વરીયાળી. पेचिश--મરડો. भूनना--શેકવું. जलना--દાઝવું.

कलकत्ते से आये हुए मुसाफ़िर कौन सी सराय में ठहरे हुए हैं। ब्राह्मण नेवले का मुंह लोहू से सना हुआ देख कर रोने लगा। लड़के के पास मरा हूआ काला सांप पड़ा देखा। दूध से जला हुआ छाश को फूक २ कर पीता है। फ़र्ज़ करो कि अ' दिआ हुआ बिन्दु है। एक ही जगह बहुत दीन तक रुका हुआ पानी गन्दा हो जाता है। मद्रास जाने वाली गाड़ी का कौन सा प्लेटफोर्म है। बिना विचारे

काम करने वाला आदमी आखिरकार पछताता है। नीचे लिखे हुए श्लोकों पर ध्यान दो। सताए हुए बैरी का कभी विश्वास न करना चाहिये। अपनी भुजबल से उपार्जित किया हुआ धन फलता है। विद्या ही मनुष्यका रूप और छिपा हुआ धन है। विद्या ही सब सुखों को देने वाली और गुरुओंका गुरु है। दुष्ट जन से घिरे हुए आदमीको सांप से क्या डर है। कडुए वचन न बोलने वाले, मीठे वचनोंकी खानी अपनी ही स्त्री से संतुष्ट और दूसरों की निन्दा न करने वाले पुरुष पृथ्वी पर कहीं २ विराजते हैं। जैसे पृथ्वी के नीचे छिपी हुई पानी की धाराएं बहती हैं वैसे ही इस के भीतर आग की ज्वालाएं भी सुलगती हैं। भुनी हुई सौंफ और बूरा लेने से पेचिश दूर होती है।

ગુજરાતી વાક્યો:—(૧) આવેલો માણસ ક્યાં છે? (૨) સેકેલા ચણા લાવો. (૩) હું લખતો લખતો થાકી ગયો છું. (૪) સાચું બોલનાર માણસને બધા ચાહે છે. (૫) મુંબાઈ જનાર ગાડી ઉભી છે. (૬) હસતો ચહેરો સૌને ગમે છે. (૭) અમે તેઓને ગાતાં સાંભળ્યાં. (૮) મને આપેલું પુસ્તક પાછું આપો.

पाठ ९

મનસુબો, ઠરાવ અને ધારણા બતાવવાં હોય ત્યારે નીચે પ્રમાણે રૂપો થાય છે.

वर्त्तमान काल.

१ मैं जाने का हूं	हम जाने के हैं
હું જવાનો છું.	અમે જવાના છીએ.
२ तू जाने का है	तुम जाने को हो, आप जाने के हैं
તું જવાનો છે.	તમે જવાના છો, આપ જવાના છો.
३ वह जाने का है	वे जाने के हैं
તે જવાનો છે.	તેઓ જવાના છે.

भूतकाल.

१ मैं जाने का था	हम जाने के थे
२ तू जाने का था	तुम जाने के थे, आप जाने के थे
३ वह जाने का था	वे जाने के थे

स्त्रीलिङ्ग वर्त्तमानकाल.

१ मैं जाने की हूं हम जाने की हैं, इत्यादि

स्त्री भूतकाल.

१ मैं जाने की थी हम जाने की थीं, इत्यादि.

ભવિષ્યત્કાલ--બહુ વાપરવામાં આવતો નથી. જ્યારે જરૂરીઆત, દબાણ અને ફરજ એવું બતાવવું હોય ત્યારે નીચે પ્રમાણે રૂપો થાય છે.

जाना धातु

वर्त्तमान काल.

१	मुझ को जाना है, मुझे जाना है, મારે જવું છે.	हम को जाना है, हमें जाना है, અમારે જવું છે.
२	तुझ को जाना है, तुझे जाना है, તારે જવું છે.	तुम को जाना है, तुम्हें जाना है, તમારે જવું છે.
३	उस को जाना है, उसे जाना है, તેને જવું છે.	उन को जाना है, उन्हें जाना है, તેમને જવું છે.

भूतकाल.

१	मुझ को जाना था, मुझे जाना था, મારે જવું હતું.	हम को जाना था, हमें जाना था, અમારે જવું હતું.
२	तुझ को जाना था, तुझे जाना था, તારે જવું હતું.	तुम को जाना था, तुम्हें जाना था, તમારે જવું હતું.
३	उस को जाना था, उसे जाना था. તેને જવું હતું.	उन को जाना था, उन्हें जाना था, તેમને જવું હતું.

भविष्यत्काल.

१ मुझको जाना होगा, मुझे जाना होगा, મારે જવું પડશે.	हम को जाना होगा, हमें जाना होगा, અમારે જવું પડશે.
२ तुझ को जाना होगा; तुझे जाना होगा, તારે જવું પડશે.	तुम को जाना होगा, तुम्हें जाना होगा, તમારે જવું પડશે.
३ उसको जाना होगा, उसे जाना होगा, તેને જવું પડશે.	उन को जाना होगा, उन्हें जाना होगा, તેમને જવું પડશે.

વાકયો.

ज़ंजीर—સાંકળ. भिश्ती—પાણી ભરનાર. कोस—ગાઉ. सूद—વ્યાજ. माहवारी—માસિક. अदा करना—ભરવું. वापिस करना—પાછું આપવું. इल्मदार—પંડિત. उस्ताद—ગુરૂ —नसीहत—શિખામણ. मुवाफ़िक़—પ્રમાણે. मौसम ઋતુ. जाड़ा—શિયાળો. फ़स्ल—ઋતુ. आयन्दा—હવે પછી, मुताबिक़—અનુસાર. सफ़ा—પાનું. लकीर—લીટી. फ़ी सदी—સેંકડે. चुंगी—જકાત. काला नमक—સંચળ. पुतलीघर—મીલ. मज़दूर—મજુર. तापतिल्ली—બરોળ. जुक़ाम—સળેખમ. मगर—પરન્તુ. महंगा—મોંઘું. घटाना—ઓછું કરવું.

आप का इरादा आज कहां जाने का है। उस को मतवाले हाथी की तरह जंजीर से बांधना होगा। भिश्ती को तीन कोस से पानी पड़ता था। मुझे माहवारी चालीस

रुपये सूदके भरने हैं। आप को तमाम रुपया एक महीने के भीतर अदा करना पड़ेगा। यह किताब चार दिन में वापिस करनी है। उन को इल्मदार उस्ताद के पास भेजना था। तुम को तुम्हारे माबाप की नसीहत के मुवाफिक चलना था। जाड़े की मौसम में हमें गर्म कपड़े पहिनने होंगे। गर्मी की फ़सल में मैं सिमले हवा खाने जाने का हूं। आयन्दा इस लड़के को आप के हुक्म के मुताबिक चलना होगा। मुझे हर सफे में १० लकीर खचनी हैं। उन को एक महीने लौट के आना होगा। रघुवीर को फ़ी सदी २) रु. चुंगी के भरने हैं। खाने के पेश्तर आप को थोड़ा सा काला नमक लेना होगा। पुतलीघर में मज़दूरों को आज से छः बजे जाना है। भाई को खाने के बाद छाश पीनी होगी। डाक्टर साहिब को तापतिल्ली का औपरेशन करना है। आप को जुलाब में गर्म पानी पीना होगा। महंगे भाव में खर्च घटाना था। उस के दोस्तों ने मिल कर कहा कि अब तुम को धीरज बांधनी होगी। मैं तुम से कहते २ थक गया मगर तुम ने मेरी एक बात न मानी अब पछताना होगा।

ગુજરાતી વાક્યોઃ—(૧) મારે નિશાળે જવું છે. (૨) મારે આજ રાત્રે વાંચવું પડશે. (૩) સંસારમાં સૌને મરવાનું છે. (૪) દવાખાનામાંથી દવા લાવવાની છે. (૫)

ભાઇને માટે ચોપડી ખરીદવી પડશે. (૬) મારી સલાહ પ્રમાણે ચાલવું પડશે. (૭) આજે વહેલું ઉઠવું પડશે. (૮) બજારમાંથી કુંચી લાવવાની છે. (૯) ભાઇને મધ મોકલવું છે. (૧૦) મારે અહીં રહેવું પડશે.

पाठ १०

अव्यय विचार.

जैसे—જેમ.
वैसे—તેમ. } जैसे घोड़ा दौड़ता हैं वैसे मत दौड़ो ।

अचानक—ઓચિંતુ. एक आदमी ने अचानक आ हम से कहा ।

शायद—કદાચ. शायद यह तुम्हारा भाई होगा ।

कभी—કદી. मैं कभी वहां नहीं जाऊंगा ।

फ़ौरन—તરત. तुम अपने भाई को फ़ौरन भेजना ।

वजह—કારણ. वह बीमार होने की वजह से आज आया नहीं हैं ।

ऐसा—એવું. ऐसा मालूम होता है कि उस के बाप का इन्तक़ाल [मृत्यु] हो गया है ।

क्योंकि—કેમકે. झूठ मत बोलो क्योंकि झूठे को कोई नहीं पतियाता ।

ज़ियादातर—ઘણું કરીને. ऐसे लड़के ज़ियादातर होशियार होते हैं ।

सचमुच–ખરેખર. सचमुच नेकी का दर्जा नेक होता है।

तो भी–તે છતાં. मैंने तुम को मना किया तो भी तुमने न माना।

इस क़दर–એટલું બધું. इस क़दर शोर (ઘોંઘાટ) मत करो।

इस लिये–તેથી (એથી) કરીને. मेरे सिर में दर्द होता है इसलिये मदर्से नहीं आ सकता।

इतना ज़ियादा–એટલું બધું. इतनाज़ियादा मत दौड़ो नहीं तो गिर पड़ोगे।

अच्छी तरह– સારી પેઠે. अच्छी तरह लिखो।

अकसर–ઘણે ભાગે. तोता अकसर गर्म देश में पाया जाता है।

पाठ ११

पिता और पुत्री की बातचीतें.

ताली—કુંચી. गुच्छा—ઝુમખું. जेब—ગજવું. सन्दूक़–પેટી. जूता—જોડા. मत—ના. क्योंकि—કેમકે. खेलते २–રમતાં રમતાં. पैर—પગ. चोट लगना—લાગવું. इक्का—એક ઘોડાવાળી ગાડી. ज़रा—થોડી. बनियाइन—ગંજીફરાક. तरकारी—શાક. कंघी—કાંકસી. गोबी–કુબી. आलू–બટાટા. दाई—એદી. चपरासी—પટાવાળો. जाड़ा—શિયાળો.

पिता–श्यामलाल, मैं बाज़ार को जाता हूं। तुम को कुछ मंगाना है ?

श्यामलाल–पिताजी मुझे बहुत कुछ लेना है। मैं आप के साथ ही चलता हूं।

पिता–तालियों का गुच्छा कोट की जेब में से ले लो और बड़ी सन्दूक में से २५) रु. निकाल के मुझे दे दो।

श्यामलाल–क्या बहिन को भी साथ ले चलेंगे, उस के जूते बिलकुल फट गये हैं और जाड़ों के लिये कुछ ऊनी कपड़ा भी खरीदना है।

पिता–आज बहिन को मत ले चलो फिर कभी देखा जायगा। क्योंकि कल खेलते २ उस के पैर में चोट लग गई थी।

श्यामलाल- आप आज्ञा दें तो मैं इक्का ले आऊं, उस में सब बैठ जायेंगे।

पिता–अच्छा ले आओ. जरा जल्दी आना, नहीं तो अंधेरा हो जायगा।

श्यामलाल–पिताजी। इक्का तैयार है आप बैठ जाइये और मैं बहिन को बिठलाता हूं।

पिता–श्यामलाल, तुम को जो लेना है सो लेलो।

श्यामलाल–मुझे एक बनियाइन, पजामे का कपड़ा. एक जोड़ जूता और चाकू, बहिन के लिये कंघी. तीसरी किताब, जूता और मोजा लेने हैं।

पिता–क्या शाम के लिये कुछ तरकारी लेनी है ?

श्यामलाल–जी हां, गोबी का फूल और आलू ले लीजिये ।

पिता–तरकारी रुमाल में बांध लो । जल्दी करो देर हो गई है ।

श्यामलाल—पिताजी! इक्केवाला चांदनी चौक तक का ढाई आना मांगता है ।

पिता—अच्छा बैठ जाओ । चपरासी घर पर मेरी राह देखता होगा ।

श्यामलाल–क्या आप को कहीं जाना है ?

पिता—हां कलक्टर साहिब का उन के बंगले पर मिलने जाना है । तुम कसरत कर के भोजन कर लेना । मैं देर में आऊंगा ।

पाठ १२

उपदेश मंजरी.

नितनित—નિત્ય. याते [इस से]—આથી. जाके—જેના. ताके—તેના. आप—ઈશ્વર. आप–પોતે. और–બીજું. दूजो—બીજો. या—આ. लहन को—લેવાને. सुलभ—સહેલું.

और--બીજું. मत—ના. खान—ખાણ. याकी—એની. मोटी--જબરી. मुई—મરેલી. खाल—ચાંમડું. सांस—શ્વાસ. सार—લોઢું. काहेको--શા માટે. ता—તે. कामी—વ્યભિચારી. काम—વ્યભિચાર. बिसरना--ભૂલવું. जाम—પહોર. जुग—યુગ. भया--થયો. फेरना—બદલવું. फेर--કપટ. हाय--હાય. मनका--મણકા. मन का--મનની. फेर—બદલ. छांड़िये (छोड़िये)—છોડવું. पर—પારકી. मोद—ખુશી. गागर—બેડું. फोरना—ફોડવું. उनयो—ચઢેલું. पयोद—વાદળાં. बिकना—વેચાવવું. खर—ખોળ. गुड़—ગોળ. भाय—ભાવ. सों—તે. ताहि—તેને. फेर--ફરી. फरकना—તોફાન કરવું. सो—એવું. खुटक—હૃદયનો ઘા. दिलासा—આશ્વાસન. बतराय—વાત કરીને. इतने में—એટલામાં.

प्रातहि उठ के नित नित, करिये प्रभु को ध्यान ।
याने जग में होय सुख, अरु उपजे सत ज्ञान ॥
साच बरोबर तप नहीं, झूंठ बरोबर पाप ।
जाके हृदय साच है, ताके हृदय आप ॥

जानि सर्व गति ईश की, करो न कबहूं पाप ।
सबहि चराचर जगत को, देखत है वह आप ॥
झूंठ कबहूँ नहिं बोलिये, झूंठ पाप कर मूल ।
झूंठे की कोउ जगत में, करै प्रतीति न भूल ॥

विद्या सम गुन जगत में, और न दूजो कोय।
सीखे ते जाके सदा, अति अद्भुत सुख होय॥
विद्या पढ़िवे में सदा, करु श्रम मन चित लाय।
या जग धन सुख लहन को, सुलभ न और उपाय॥
नारी अबला मत कहो, नारी नर की खान।
नारी ते पैदा हुए, राम कृष्ण भगवान॥
दुर्बल को न सताइये, याकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांस सो, सार भस्म होइ जाय॥
दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय॥
सुख में सुमिरन ना किया, दुख में किया जो याद।
कह कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद॥
सुमिरन की शुधि यों करौ, जैसे कामी काम।
एक पलक बिसरै नहीं, निसि दिन आठों जाम॥
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारिके, मन का मनका फेर॥
उद्यम कबहुं न छांडिये, पर आशा के मोद।
गागर कैसे फोरिये, उनयों देखि पयोद॥
भले बुरे जहं एक से, तहां न बसिये जाय।
ज्यों अन्याय पुर में बिकै, खर गुड़ एकै भाय॥

जो धन्वन्त सो देय कुछ, देइ कहा धन हीन ।
कहा निचोरे नग्न जन, न्हान सरोवर कीन ॥

कुण्डलिया.

जाकी धन धरती लई, ताहि न लीजे संग ।
जो संग राखे ही बने, तो करि राखु अपंग ॥
तो करि राखु अपंग फेर फरकै सो न कीजै ।
कपट रूप बतराय ताहिको मन हरलीजै ॥
कह गिरधर कविराय खुटक जै है नहिं ताकी ।
कोटि दिलासा देउ लई धन धरती जाकी ॥

पाठ १३

एक मज़दूर की चालाकी.

खेत—ખેતર. किसान—ખેડુત. ठेका—કૉન્ટ્રાક્ટ. शाम—સાંજ. गहरा—ઉંડું. गड्ढा—ખાડો. अफ़सोस—દિલગીર. भिसकजाना—ખરી પડવું. दुपट्टा—ફેંટો. राह लेना— રસ્તો લેવો. ओर—તરફ. लेकिन—પણ. सिर—માથું. इसीलिये—તેથીજ કરીને. नाराज़ होना—નાખુશ થવું.

एक किसान को अपने खेत में एक कूंवा खुदवाना था। उसने खोदने का काम कुछ रुपये पर एक मज़दूर को ठेका दे दिया। मज़दूर ने उसी दिन काम आरम्भ कर दिया। शाम तक बड़ी महिनत से वह चार फ़ीट गहरा खोद कर घर गया। और सुख की नींद सोया। दूसरे दिन जब वह सुबह फिर खोदने आया तो क्या देखता है कि कूंवा का किनारा भिसक गया है जिस से गड्ढा जो उस ने कल तैयार किया था मिट्टी से आधा भर गया है। यह देख उसे बहुत अफ़-सोस हुआ। कुछ देर सोचने के बाद उस ने अपना दुपट्टा और लोटा किनारे पर रख दिया और घर की राह ली।

थोड़ी देर के बाद किसान भी घर से बाहर निकला और देखने चला। वहां कूंवे में मिट्टी और ऊपर मज़दूर का दुपट्टा और लोटा देख कर उसने समझा कि मज़दूर कूवे में मिट्टी से दब गया है। उस ने इतना हल्ला मचाया कि पड़ोसी आ गये और कूंवे से मिट्टी निकालने लगे, परन्तु जब बहुत सी मिट्टी निकल जाने पर भी मज़दूर का पता न चला, तब उन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इतने में उन्हें मज़दूर घर की ओर से आता हुआ दिखलाई दिया। उस ने वहां आकर उन्हें मिट्टी निकालने के लिये धन्यवाद दिया और कहा—आज सवेरे जब मैं आया था कूंवे का किनारा भिसका हुवा पाया। लेकिन मेरे सिर में बहुत दर्द था इसी लिये

घर पर जाकर पड़ रहा। अब मैं अच्छा हूं और अपना दुपट्टा तथा लोटा लेने आया हूं।

कोई कोई पड़ोसी उस की चाल पर नाराज़ हुए लेकिन उस की चतुराई पर हंसने लगे।

पाठ १४

[बाबू हरिश्चन्द्र का]

दशरथ विलाप.

बुढ़ापा—घડપણ. य (यह) આ. छिपाना–સંતાડવું. व (वह) તે. बुड्ढा–ઘરડો. ओर–તરફ. पैर–પગ. धरना—મૂકવું. लली–દીકરી. और–વધારે. पुतली—કીકી. ढूंढना—શોધવું. बता देना–દેખાડી આપવું. मिला देना–ભેટો કરાવી દેવો. बुझाना—ભટાડવું. ज़माना—સમય (દુનિયા) खिलौना—રમકડું. भागना—નાસવું. तोता—પોપટ. रोना–રડવું. कलेजा–કાળજું. धूप–તડકો. कुम्हलाना—ચિમળાઇ જવું. सायेमें–છાયામાં. डरना–બીવું. ज़मीं–જમીન. पयादा–પેદલ. दर–બારણું. बे हया–બેશરમ. भला—રખેને. मुखड़ा—મુખ. हविस–ઇચ્છા. सर्वस—સર્વસ્વ. तड़पना—તરફડીયાં મારવાં. सेज—શૈય્યા.

कहां हो ए हमारे राम प्यारे ।
किधर तुम छोड के मुझको सिधारे ॥
बुढ़ापे में य दुखभी देखना था ।
इसो के देखने को मैं बचा था ॥
छिपाइ है कहां सुन्दर व मूरत ।
दिखा दो सांवली सी मुझ को सूरत ॥
छिपे हो कौन से परदे में बेटा ।
निकल आओ कि अब मरता है बुड्ढा ॥
बुढ़ापे पर दया मेरे जो करते ।
तो बन की ओर क्यों तुम पैर धरते ॥
किधर वह बन है जिस में राम प्यारा ।
अजुध्या छोड़कर सूना सिधारा ॥
गई संग में जनक की जो लली है ।
इसी से और मुझ को बेकली है ॥
कहेंगे क्या जनक यह हाल सुन कर ।
कहां सीता कहां बन वह भयंकर ॥
गया लछमन भी उन के साथ ही साथ ।
तड़पता रह गया मैं मलते ही हाथ ॥
मेरी आंखों की वह पुतली कहां है ।
बुढ़ापे की मेरी लकड़ी कहां है ॥

कहां ढूंढ़ों मुझे कोई बता दो।
मेरे बच्चों को बस मुझे मिला दो॥
लगी है आग छाती में हमारे।
बुझाओ कोइ उन का हाल कह के॥
मुझे सूना दिखाता है ज़माना।
कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना॥
अंधेरा हो गया हाय घर मेरा।
हुआ क्या मेरे हाथों का खिलौना॥
मेरा धन लूट कर के कौन भागा।
भरे घर को मेरे किस ने उजाड़ा॥
हमारा बोलता तोता कहां है।
अरे वह राम सा बेटा कहां है॥
कमर टूटी न बस अब उठ सकेंगे।
अरे बिन राम के रो रो मरेंगे॥
कोई कुछ हाल तो आकर के कहता।
है किस बन में मेरा प्यारा कलेजा॥
हवा और धूप में कुम्हला के थक कर।
कहीं साये में बैठे होंगे रघुवर॥
जो डरती देखकर मट्टी का चीता।
व बन बन फिर रही है आज सीता॥

कभी उतरी न सेजों से ज़मीं पर ।
व फरती है पियादे आज दर दर ॥
न निकली जान अब तक बेहया हूं ।
भला मैं राम बिन क्यों जी रहा हूं ॥
मेरा है वज्र का लोगो कलेजा ।
कि इस दुखपर नहीं अब भी य फटता ॥
मेरे जीने का दिन बस हाय बीता ।
कहां है राम लछमण और सीता ॥
कहीं मुखड़ा तो दिखला जायें प्यारे ।
न रह जाये हविस जी में हमारे ॥
कहां हो राम मेरे राम ए राम ।
मेरे जीवन मेरे सर्वस्व मेरे प्रान ॥
मेरे प्यारे मेरे बच्चे मेरे श्याम ।
हुए क्या हाय मेरे राम भगवान ॥
कहां हो राम हां प्रानों से प्यारे ।
य कह दशरथ जी सुरपुर को सिधारे ॥

पाठ १५

नल राजा.

प्राचीन कालमें निषेध देश में नल नामक एक राजा पैदा हुआ। इस के रूप गुणों को देख उस के माता पिता खुशी से फूले न समाते थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् आप गद्दी पर आये। राजा नलने अपने सदृश कन्या न मिलनेसे किसी के साथ ब्याह न किया। दूसरी तरफ़ कुण्डिनपुर के राजा के यहां जगत को मोहने वाली एक सुन्दर दमयन्ती नामक कन्या थी। एक वक्त नल को एक हंस मिला। उस हंसने दमयंती का विवाह नल के साथ कराने की प्रतिज्ञा की। और वह वहां से उड़ कर कुण्डिनपुरमें आया। हंस ने दमयन्ती को नल की मोहनी लगाई और प्रेम पाश में बांध कर पीछे लौटा और नल की राजधानी में पहुंचा और दमयन्ती के रूप योवन की प्रशंसा राजा नल को कही। दोनों परस्पर प्रेम की डोरी में बंध गये। कुण्डिनपुरमें दमयन्ती का शरीर दिन प्रतिदिन वियोग की दाह से जलने लगा। भीमकने उस का कारण जान दमयन्ती के स्वयंवर की तैयारी की। सब राजा और स्वर्ग के देवता लोग वहां आ कर जमा हुए। मंडपमें पांच नल रूप रंग में एक से देख दमयन्ती बड़ी घबड़ाई क्योंकि इन में प्राणेश्वर नल कौन है यह न जान

सकी। तब उसने ईश्वर को याद किया और ईश्वर की प्रेरणा से नल को सहज ही में पहिचान लिया। दमयन्तीने वरमाला सहर्ष नल के कंठ में डाली और नल के साथ ब्याह हो गया।

पाठ १६

स्वदेशाभिमान.

पलास—કેસુડો. सोई—તે. कभी—કદી. चाहे—યદિ. कायर—ભીરૂ. हैया (हिय) હૃદય. आज़ाद—સ્વતંત્ર. अनोखा—વિચિત્ર. तौर—રીતે. फूला फला है–ઉછરીને મોટો થયો છે. खुदको—પોતાની જાતને.

अय देश मान वाले। निज देश भक्ति कर ले।
हटना कभी न पीछे चाहे जान तन से निकले॥
हटता जो देश हित से कायर बडा है सोई।
लेगा न नाम उस का पश्चात् मृत्यु कोई॥
जैसे पतंग दीप का कुरबान खुद को करता।
इस तौर देश हित में क्यों दिल नहीं है रखता॥
जिस भूमि में तू रह के फूला फला है भाई।
उस देश को सदा ही हैया से कर भलाई॥

आज़ाद कर वतन को संताप दुष्ट जन के।
आज़ादगी से मिटते सारे हैं दुःख तन के॥
माल और विद्या बहु प्राप्त यदि करी है।
बिन देश भक्ति सब ही पलास पुष्पवत् है॥
जाता है व्यर्थ तेरा बिन देशभक्ति जीवन।
इस तौर से समझ कर कर ले सफल यह जीवन॥
रह जायगा सदा को शुभ नाम जगत में तेरा।
स्वदेश भक्ति केवल मुख मंत्र हो जो तेरा॥
स्वदेश भक्ति पय का यदि पान कभी जो करले।
करता नहीं है परवा चाहे जान तन से निकले॥

चोधरी.

पाठ १७

कोयल.

सभी—બધા. पाई जाना—જોવામાં આવવું. सूरत—આકૃતિ. मिलना जुलना—મળવું. लेकिन—પરન્તુ. आम—કેરી. यानी—એટલે. आगाही—सूचना. ખબર. साफ़—સ્પષ્ટ. अंडा—ઈંડું. घोंसला—માળો. हिफाज़तसे—સાચવીને. लाड़ प्यार—હેત.

कोयल प्रायः सभी देशों में पाई जाती है। यह सूरतमें कौवे से मिलती जुलती है। लेकिन आकार में कौवे से कुछ छोटी होती है। जब आम पर आम आने लगते हैं तब इस को चैत्र वैशाख महीने में बोलते सुनते हैं यानी वसन्त ऋतु में यह देखी जाती हैं। वसन्त ऋतु के बीतने पर वह दूसरे देशों को जहां वसन्त ऋतु होती है चली जाती है। दूसरे देशों की वसन्त ऋतु की इस को कैसे आगाही होती है इस को ईश्वर ही जाने। मनुष्य की कल्पना से बाहर है। कोयल का स्वर बड़ा मधुर होता है। दुनिया के कवियों ने इस की प्रशंसा में तरह २ की कविताएं हर एक भाषामें लिखी है। कहते हैं कि कोयल अपने अंडे कौवे के घोसले में रख देती है, बेचारा कौवा अपने अंडे समझ कर उन को बड़ी हिफ़ाज़त से सेहता है. जब अंडों में से बच्चे निकल आते हैं उन को बड़े लाड़ प्यार से चुंगाता है। बच्चे जब बोलने लगते हैं तब कौवे को मालूम होती है कि ये मेरे बच्चे नहीं हैं। और वह उन को अपने घोंसले में से चांच मार २ कर निकाल देता है। कोयल की बोली की नकल प्रायः मदर्सों के बच्चे किया करते हैं।

पाठ १८

स्वर्गीय सङ्गीत

[द्रुतविलम्बित]

अपवर्ग—મોક્ષ પ્રગતિ–ચઢતી, વરો–પસન્દ કરો. पुरुष हो, पुरुषार्थ करो उठो ।

पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो;
हृदय की सब दुर्बलता तजो ।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो—
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो ?
प्रगति के पथ में विचारो, उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥ १ ॥

न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है;
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है ।
समझ लो, यह बात यथार्थ है—
कि पुरुषार्थ वही पुरुषार्थ है ।
भुवन में सुख-शान्ति भरो उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥ २ ॥

न पुरुषार्थ बिना वह स्वर्ग है;
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है ।
न पुरुषार्थ बिना क्रियता कहीं,

न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर—तुल्य वरो, उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥ ३ ॥

न जिस में कुछ पौरुष हो यहां—
सफलता वह पा सकता कहां।
अपुरुषार्थ भयंकर पाप है;
न उस में यश है, न प्रताप है।
न कृमि–कीट–समान मरो उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥ ४ ॥

मनुज–जीवन में जय के लिये—
प्रथम ही दृढ़ पौरुष चाहिये।
विजय तो पुरुषार्थ विना कहां,
कठिन है चिर जीवन भी यहां।
भय नहीं, भव–सिन्धु तरो, उठो
पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो ॥ ५ ॥

यदि अनिष्ट अड़े अड़ते रहें;
विपुल विघ्न पड़ें, पड़ते रहें।
हृदय में पुरुषार्थ रहे भरा—
जलधि–क्या, नभ क्या, फिर क्या धरा ?
दृढ़ रहो, ध्रुव धैर्य्य धरो, उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥ ६ ॥

यदि अभीष्ट तुम्हें निज सत्व है।
प्रिय तुम्हें यदि मान-महत्व है।
यदि तुम्हें रखना निज नाम है;
जगत में करना कुछ काम है।
मनुज। तो श्रम से न डरो, उठो
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो॥ ७॥
प्रकट नित्य करो पुरुषार्थ को;
हृदय से तज दो सब स्वार्थ को।
यदि कहीं तुम से परमार्थ हो—
यह विनश्वर देह कृतार्थ हो।
सदय हो, पर दुःख हरो, उठो;
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो॥ ८॥

मैथिली शरण गुप्त.

पाठ १९

पालतू—પાળેલું. कई—ઘણા. सफ़ेद—ધોળી. सींग—શીંગડું. बैल—બળદ. सहारा—મદદ. खेती—પાક. मुफ़ीद—લાભકારક. सचमुच—ખરેખર. गोबर—છાણ. ताकि—જેથી કરીને. खाल—ચામડી. जूता—જોડા. हड्डी—હાડકું. खाद—

આતર. बढ़िया—ઉત્તમ. ख़ास तौर से—વિશેષ કરીને. अनमोल—કીંમતી.

दयालु परम पिता परमात्माने जो कुछ इस संसार में उत्पन्न किया है वर सब मनुष्य मात्र के उपकार के लिये है । उन में से एक गाय है । पालतू जानवरों में गाय सब से उच्च कोटि को समझी जाती है । गायें कई रंग की होती हैं जैसे कि काली, लाल, और सफ़ेद । सफ़ेद गाय देखने में बड़ी सुन्दर होती है । काली गाय को श्यामा कहते हैं । जिस गाय के सींग हिलते हैं वह बड़ी भोली होती है और उस को कपिला कहते हैं । गाय के बच्चे को बैल कहते हैं । बैल के सहारे हमारे देश में खेती की जाती है । बैल को गाड़ी और हल खेंचने के काम में लेते हैं । गाय का दूध मा जैसा मधुर, पौष्टिक और हलका होता है । वह रोगी और बच्चों को बड़ा मुफ़ीद होता है । हिन्दू लोगों में यह बड़ी पवित्र गिनी जाती है । सचमुच गाय बड़ी पवित्र है । पवित्र किस को कहते हैं ? जो मनुष्य की तन्दुरस्ती के लिये बहुत उपयोगी है वही वस्तु पवित्र है ।

गाय ही एक ऐसा पशु हैं कि जिस का हर एक अंग मनुष्य के लिये उपयोगी है । इस का दूध मा के दूध की जगह बच्चों को दिया जाता है । इस का गोबर लीपने के काम में आता है । इस के लीपने से जहरी जन्तु नष्ट हो

जाते हैं। हिन्दुओं में जब कोई आदमी मर जाता है तब गोबर से चौका लगा कर लाश को उस चौकेपर सुलाते हैं ताकि जहरी जन्तु घर में इधर उधर फैल न जावें। इस का मूत्र जलोदर जैसे भयंकर रोगों को नष्ट करने की सामर्थ्य रखता है। इस की खाल के जूते बगैर बनते हैं। सींग की कंघी, कंधे, बटन आदि बनाई जाती है। हड्डी खाद के काम में आती है। इन्ही कारणो से हिन्दू लोग इस को पवित्र मानते हैं। प्राचीन काल में ऋषि, मुनि, राजा और रंक सभी गाय पालते थे और जिस के बहुत सी गायें होती थीं वह धनिक गिना जाता था। इसी कारण गाय को गोधन कहते हैं। हिन्दू लोगों में गोदान सब से बढ़िया दान समझा जाता है और मरते समय खास तौर से गाय पुण्य की जाती है। इस की पूंछ लम्बी और सिरे पर बालों का गुच्छा होता है जिस से अपने शरीर पर की मक्खियों को उड़ाती है।

हमें ईश्वर का उपकार मानना चाहिये कि जिसने मनुष्य के लिये ऐसा अनमोल पशु दिया है॥

पाठ २०

सिंह.

रियासत—રાજ્ય. अपेक्षा—કરતાં. गर्दन—ડોક. बढ़िया—ઉત્તમ. डीलडोल—કદ. नोक—અાણી. सिरा—છેડો. क़रीब—આશરે. ताक़तवर—મજબુત. आसानी से—સહેલાઇથી. दहाड़ना—બરાડા પાડવું. मारे—લીધે. अनमोल—કીમતી.

सिंह पशुओं का राजा गिना जाता है। रियासत जूनागढ़ में गिरनार का सिंह बड़ा आर बलवान होता है। हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में भी सिंह पाया जाता है लेकिन गिरनार के सिंह की अपेक्षा छोटा और कमसूरत होता है। सिंह से सिंहनी छोटी होती है और उस की गर्दन पर अयाल नहीं होती। सिंह जब तक भूखा नहीं होता किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाता। आफ़्रिका और ईरान में भी सिंह पाया जाता है। आफ़्रिका का सिंह दुनिया भर के सिंहों में बढ़िया और बड़ा होता है। सिंह की आकृति बिल्ली से मिलती जुलती है। इसी कारण इस को शेर की मौसी कहते है। सिंह डीलडोल में छोटे बैल के बराबर है। इस की लम्बाई नाक की नोक से लेकर उस की पूंछ के सिरे तक क़रीब १० से १२ फ़ीट होती है। सिंह के पंजे बड़े मज़बूत होते हैं जिन से वह शिकार को पकड़ता है। सिंह इतना ताक़तवर होता है

कि वह भैंस को अपनी पीठ पर रख कर कई मील तक आसानी से ले जाता है। उस की दहाड़ बादल की गर्जना से कुछ कम नहीं होती। सिंह जब जंगल में दहाड़ता है तब सारे प्राणी डर के मारे इधर उधर भागने लगते हैं। और मोर बादल की आवाज जान कर बोलने लगते हैं। वह तेज़ प्रकाश को सहन नहीं कर सकता। इसी कारण जंगल में बसने वाले रात्रि के समय अपनी २ झोंपड़ी में आग जलाये रखते है। वह दिन में गुफ़ा के भीतर छिपा पड़ा रहता है और रात को शिकार की खोज में बाहर निकलता है। सिंह बिल्ली और कुत्ते की तरह जीभ से पानी चटता है। राजा लोग इस की शिकार के बड़े शौक़ीन होते हैं। आज कल सिंह सरकस में रक्खा जाता है और उस को तरह २ के खेल सिखाये जाते है। सिंह साठ वर्ष जीता हैं॥

इत्योऽम्